द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :–

प्रथम अध्याय में हम इस अध्याय के उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ, आवश्यकताएं एंव महत्वों की चर्चा की गई है। प्रस्तुत अध्याय में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है।

सत्त मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान व अनुभव का लाभ अनुसंधान में मिलता है। शोधार्थियों द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर किये शोध कार्य या अन्य कार्यो (लेख) आदि से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करता है तो उससे संबंधित साहित्य का अवलोकन एक अनिवार्य व प्रारंभिक कदम होता है जो अनुसंधान कार्य को सही दिशा व गति देने में सहायता प्रदान करता है।

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व :–

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधान कर्ताओं द्वारा किया जा चुका है, वह अन्य परिस्थितियों में पुनः किया जा चुका है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है?

3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के निष्कर्ष और उसके निष्कर्ष मिलाने में मद्द मिलती है।

4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

5. संबंधित साहित्य की समीक्षा करने से ही हम अपनी समस्या को हल करने की विधि व प्रविधि को समझ सकते हैं।

6. अंतिम व महत्वपूर्ण विशेष कारण यह जानना भी है कि पिछले अनुसंधायकं ने अपने अध्ययन में और आगे अनुसंधान के लिए क्या अनुशंसाएं की है।

1. **स्टेलजर (1960)** के अनुसार शोध के अनुसार विद्यार्थियों कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि में पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यदि पर्यावरण अनुकूल है तो शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च कोटि की होती है।

2. **शर्मा (1976)** – ने माध्यमिक शाला स्तर पर भूगोल में मानचित्र कार्य में सामान्य त्रुटियों पर लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। अध्ययन में बताया कि इन त्रुटियों का मुख्य कारण मानचित्र अंकन का अभ्यास न कराया जाना, मानचित्र प्रयोग का शिक्षण में नियमित प्रयोग न होना, तथा भूगोल के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अरूचि होना।

3. **ग्रोवर (1979) गौर (1982)** – ने घर द्वारा प्रदान किए जाने वाले (विद्यार्थियों को) वातावरण की और गया है। **सरकार** (1983) ने उच्च उपलब्धि वाले और निम्न उपलब्धि वाले छात्रों में एक

महत्वपूर्ण अंतर गृह विभिन्नता जैसे शैक्षिक वातावरण, आय, खुला वातावरण सामाजिक वातावरण सुविधाओं का प्रावधान और अभिभावक बालक संबंध के आधार पर दिखाया।

4. **हाइबेल (1980)** – में कक्षा पर्यावरण तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन में संबंध ज्ञात किया इस अध्ययन के अनुसार कक्षा पर्यावरण तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन में धनात्मक संबंध होता है।

5. **सरकार (1983)** - ने उच्च उपलब्धि वाले और निम्न उपलब्धि में एक महत्वपूर्ण अंतर गृह विभिन्नता जैसे शैक्षणिक वातावरण, आय खुला वातावरण, सामाजिक वातावरण, सुविधाओं का प्रावधान और अभिभावक बालक संबंध के आधार पर दिखाया।

6. **पांडे (1981) और पुरी (1984)** - में विद्यार्थियों में शैक्षणिक प्राप्ति को प्रेरित करने के लिए वातावरण के प्रभाव का एक कारक के रूप में अध्ययन किया है। उन्होनें यह निष्कर्ष निकाला कि शहरी वातावरण ग्रामीण वातावरण की तुलना में शैक्षणिक प्राप्ति के लिए अधिक उपर्युक्त है। **पुरी** ने बताया है वातावरण सुविधाओं का प्रभाव सामान्य शैक्षणिक प्राप्ति एवं अंग्रेजी भाषा दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण था।

7. **भट्टाचार्य (1984)** "भूगोल शिक्षण के लिए विभिन्न मॉडल्स के प्रभाव का अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किए।

    1. पारंपरिक विधि और संप्रत्यय आधारित प्रतिमान से पढ़ाने में कोई विश्वसनीय अंतर नहीं है।

2. मानव भूगोल की अपेक्षा प्राकृतिक भूगोल में विद्यार्थियों की रूचि अधिक है।

8. **पाटिल (1985)** में सोलापुर जिले के ग्रामीण स्कूलों में भूगोल शिक्षण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया जिसमें मुख्य परिणाम निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किए गये :-

1. ग्रामीण स्कूलों में भूगोल कक्ष नहीं है।
2. अधिकतर शिक्षण व्याख्यान विधि व परम्परागत विधियों से होता है।
3. समय की कमी के कारण भौगोलिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती ऐसा शिक्षक मानते हैं।

9. **मैत्रा (1985)** – ने अपने अध्ययन में गृह वातावरण को एक महत्वपूर्ण विभिन्नता के रूप में बताया जो बुद्धिमान बच्चों में कम प्राप्तांकों की प्राप्ति का कारण होता है।

10. **खरे अंजली (1993–94)** खरे अंजली के अध्ययन ''सामाजिक अध्ययन विषय में पर्यावरण के प्रभाव से शैक्षिक उपलब्धि पर अंतर का अध्ययन 1993–94 वर्ष में पर्यावरण के प्रभाव से सामाजिक अध्ययन विषय की उपलब्धि पर क्या असर पड़ता है यह देखने के लिए उन्होनें सोद्देश्य न्यादर्श का संकलन किया और अध्ययन में लड़कों व लड़कियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अनुपात ज्ञात किया।

11. जैनी ने (1987) – द्वारा गुजरात के माध्यमिक स्कूल के भूगोल शिक्षण की स्थिति का अध्ययन किया। जिसमें निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुएः–

1. 50% विद्यालयों में भूगोल शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है।
2. 52% विद्यालयों में भूगोल पढ़ाने संबंधी पर्याप्त सुविधाएं नहीं है।
3. 42% भूगोल शिक्षकों ने कोई Refresher Course नहीं किया।

12. पाल (1986) में विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता पर वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि गृह वातावरण के कारण कैसे बालक की योग्यताओं को पहचानना पालकों की अपेक्षाएँ बालक की इच्छा को प्रोत्साहन, पालकों का स्नेह स्वयं करने एवं स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करना आदि। कोई अध्ययन किए गए सृजनात्मक क्षमताओं के चार प्रकारों में प्रत्येक के साथ धनात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध था।

13. सक्सेना (1990) में प्राथमिक स्तर के कक्षा 4 के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास में व्यक्तित्व के तथ्यों तथा अध्यापक की अध्ययन विधियों का अध्ययन किया।

इसके अध्ययन के उद्देश्य थेः–

1. कक्षा 4 के छात्रों में भौगोलिक कौशलों का विकास करना।
2. कक्षा 4 के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास पर व्यक्तित्व तथ्यों के प्रभावों का अध्ययन करना।

3. कक्षा 4 में भूगोल पढ़ाने वाले शिक्षकों के मत भौगोलिक कौशल विकास में उपयुक्त अध्ययन विधियों के विषय में जानना।

4. कक्षा 4 के लड़कों में भौगोलिक कौशल विकास व्यक्तित्व के तथ्यों का अध्ययन करना।

5. कक्षा 4 की छात्राओं ने भौगोलिक कौशल व व्यक्तित्व तथ्यों का अध्ययन करना।

14. राजोरिया (1998) में कक्षा 5 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुएः–

1. छात्र–छात्राओं के लिंग गत अवधारणात्मक कठिनाई अध्ययन में बालक एवं बालिकाओं के मध्य अवधारणात्मक कठिनाई में आंशिक संबंधता पाई गई अवधारणात्मक कठिनाई में विभिन्नता अधिक पाई गई अभिभावकों के व्यवसाय के संगत छात्रों की अवधारणात्मक कठिनाई में सहसंबंध उल्लेखनीय नहीं है।

2. अभिभावकों की शिक्षा के संगत कठिनाइयों में उच्चतरीय संबंध है अशिक्षित वर्ग के अभिभावक वर्ग के बच्चों की कठिनाईयाँ शिक्षित अभिभावक वर्ग के बच्चों की तुलना में अधिक है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन संबंधी उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि प्राथमिक शालाओं में शिक्षण सामग्री निवेश (Input) संबंधी अध्ययन बहुत कम संख्या में किए गये हैं। विनिवेश के

फलस्वरूप छात्रों की उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों को शोधकार्य की जानकारी, शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाने में सहायक होती है।

15. **दुबे (2000)** में हाई स्कूल स्तर पर भूगोल शिक्षण में अनुदेशन उद्देश्यों के प्रस्तुतिकरण का प्रभाव अध्ययन किया जिसमें निम्न निष्कर्ष सामने आये:-

    1. प्रायोगिक और नियंत्रित समूह के छात्रों की उपलब्धि समान स्तर की पायी जाती है।
    2. पूर्व परीक्षण में छात्रों का पूर्व ज्ञान बहुत ही अल्प था।
    3. छात्रों की उपलब्धि पर अनुदेशन उद्देश्यों के प्रोशिक और नियंत्रित समूहों के बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
    4. परम्परागत शिक्षण विधि से छात्र नवीन शिक्षण की अपेक्षा कम सीखते हैं। और अनुदेशन उद्देश्यों के प्रस्तुत कर दिए जाने पर शिक्षण अधिक प्रभावी व रोचक हो जाता है।

16. **तोमर गीता (2002–2003)** – ने "ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में कक्षा आठवीं के सामाजिक अध्ययन की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं कठिन शिक्षण बिंदुओं का तुलनात्मक अध्ययन" किया जिसके निष्कर्ष निम्नानुसार है:-

1. ग्रामीण व नगरीय विद्यार्थियों में भूगोल विषयांश आवधारणाओं व जटिल शिक्षण बिंदुओं की उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया जो नगरीय विद्यार्थियों के पक्ष में था।